'महुए का पेड' कहानी में नारी शोषण का चित्रण

Mahue Ka Ped kahani Me Nari Shoshan Ka Chitran

Dr.Hasankhan K Kulkarni,
Associate Professor
Indira Gandhi Govt. First Grade,
Womens CollegeSagar-577401,
Dist:- Shimoga, Karnatka.

भूमिका:-

समाज में मनुष्य और साहित्य का संबंध बहुत गहरा होता है। **साहित्यिक प्राज्ञ कहते हैं कि साहित्य समज का दर्पण होता है।** लेखक साहित्य द्वारा मानव जीवन के विविध अंशों, पहलुओं का चित्रिण करता है। साहित्य, लोकोक्ति, मुहावरे, कविता आदि का सृजन मनुष्य, कवि के उद्गार और भावनाओं द्वारा होता है। जो सहृदयी कवि होता है वह समाज के विविध क्षेत्रों में अघटनिय घट्नाएँ घटने पर उनको देखकर भाउक हो ऊठता है और वह दुखद हैं तो साहित्यिक कृतियों में, कविताओं में आंसुओं के दो बूँद बहाता है। अन्याइयों पर निशाना लगा कर शब्द रूपी तीर चलाता है या गलत करने वाले को घोडे के चाबुक के दो कोडे लगाता है। इस प्रकार साहित्यकार लेखनी द्वारा अपना काम करता है। साहित्यकार मानव जीवन के विविध परिवेश को साहित्य के विविध विधाओं द्वारा अभिव्यक्त करता है।

समकालीन शब्द का अर्थ:-

जो एक ही समय में घटी हो वह घटना समकालीन होती है। एक समय में रहने वाले दो अलग- अलग व्यक्ति समकालीन कहलाते हैं। उदाहरण केलिए मोहन और उसका दोस्त अरुण सन २०२१ ई. में एक ही समय में रहें तो वह समकालीन होते हैं। जो वर्तमान समय में रहा हो वह समकालीन है। समकालीन शब्द का अर्थ अंग्रेजी में contemporary होता है। उसी प्रकार जो एक युग के एक समय के समकालीन समाज का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक परिस्थितियों का भानात्मक चित्रण अथवा लेखन ही समकालीन साहित्य कहलाता है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में नारी शोषण:-

नारी को समाज में पूजनीय स्थान है। समाज में गार्गी, सती, विद्योत्तमा, सावित्री आदि नारियों का नाम गौरव, सम्मान के साथ लिया जाता है। माता स्वरूप नारी को गौरवादर भी उतना ही अधीक मिलता है इसलिए जाहाँ भी, जब भी नारी पर अन्याय, अत्याचार होता है वहाँ सारा समाज एक होकर अन्याय के विरुद्ध लडता है। सब मिलकर आतताईयों (Gangster) को सजा देने की मांग करते हैं। नारी को जगत जननी भी कहते हैं । हर एक जीवी की जननी (माँ) होती है, अपने प्राणों को देकर भी क्यों न हो बच्चों की रक्षा करती है। जगत में आज मानव, पशु, पक्षियों की जो इतनी आबादी दिखाई दे रही है, तो वह माँ रूपी जीव का ही कारण है। मानव समाज में नारी पूजनीय है।

नारी को माता कहते हैं, जगज्जननी कहते हैं, देवी कहते हैं, नारी तो ममता की मूर्ती होती है फ़िर भी जो प्राचीन काल से शोषण होता आया है अभी यहाँ-वहाँ होरहा है, उसे रोकने की

और नारी के प्रति चेतना जगाने की कोशिशें हो रही हैं। नारी आज बच्चों द्वारा, पती द्वारा, आतताइयों द्वारा गाँव के पटेल-सेठों द्वारा शोषित हो रही है। ऐसी नारी शोषण की घटना '**महुए का पेड**' कहानी में दिखाई देती उसका चित्रण निम्न किया गया है।

लेखक मार्कण्डेय का जीवन परिचय:-

मार्कण्डेय का जन्म सन १९३० ई. को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के एक गाँव में किसान परिवार हुआ। वे इलाहाबाद विश्व विद्यालय से १९५२ ई. में हिंदी एम.ए. पास हुए। उनकी आरंभिक कहा्नियाँ 'गुलरा के बाबा', पानफूल, बीच के लोग, हंसाजाई अकेला, दूध और दवा, महुए का पेड आदि अत्यंत प्रसिद्ध कहानियाँ है।

मार्कंडेय की कहानी '**महुए का पेड**' में आनेवाली दुखना का पति किसान था एक दिन ईख के खेत को पानी की सींचाई करते-करते बुखार से बेहोश होकर मर जाता है। गाँव के लोग कोई भी उसकी मदद नहीं करते न दवा करते न अस्पताल को पहुँचा ते, वह तेज बुखार से अखरी साँस लेता है। यघटना बीत कर २५ वर्ष होगये हैं अब यह सब यादकरके रोती रहती है। अब दुखना की उम्र ५० साल की है। दुखना अकेली एक झोपडी में जिंदगी बिता रही थी। गाँव का ठाकुर उसका सारा खेते, सारी ज्यादाद हतिया लिया था। अब उसके पास केवल उसकी झोपदडी और उसके सामने एक महुए का पेड मात्र बचा था।

ठाकुर उस महुए के पेड को भी हतिया ने का प्रयत्न कर रहा था। गाँव के सारे लोग उसके पीछे पडे थे, चुल्हे में जलाने के लिए उसकी डालियाँ तोडते थे, पत्ते तोडकर जानवरों को खिलाते थे। इसी लिए दुखना रात-दिन झोपडी और पेड की रखवली करते जीवन बिता रही थी। पिछले दिनों में हरखू की माँ प्रयाग के त्रीवेणी संगम में पुण्य स्नान कर आई थी, तो वह स्वर्ग नरक की बातें करते हुए दुखना को भी काशी की तीर्थ यात्रा करने केलिए कहती है।

महुए का पेड और दुखना स्त्री का संबंध माँ-बेटे जैसा था। दुखना अपनी संपत्ति जाने पर महुए के पेड से चिपके-चिपके रहती थी। दुखना का न पति, न बेटा, न बेटी वह घर छोड कर कहीं नहीं जासकती थी । त्रीवेणी संगम में मुंडन करके आने के बाद हरखू की माँ दुखना को कहती है- "**कब तक इसे थामे बैठी रहेगी मैया ! दोदिन की जिंदगी में तीर्थ-बरत न कर लोगी तो आगे क्या?**"**१** यह बात बता देती है, और हरखू की माँ को पेड बेचकर तीरथ-वृत करने केलिए कहती है। अथवा रिस्तेदारों के पास कर्ज कर के तीर्थ यात्रा को जाने कहती है तो, दुखना कहती है- "**हरखू की माँ, यह सब तुम ठीक कहती हो, लेकिन तुम जानती नहीं। इस दुनिया में कमजोर का ठिकाना नहीं। जमीन ठाकूर की है, पेड मेरा है। अब उसकी बखरी बन रही है, लकडी की कमी है, कहता है, इसे देदो, तो बडा काम हो जाये।**"**२**

25 वर्ष पह ले बीती दुखद घटन की याद आती है, जो पती १० बीघा जमीन में इख की सींचाई करते समय कहा था- "**तू क्यों यहाँ सती हो रही है। मैं तो अभी जीता हूँ घर चल! आज सींचाई खतम करके लौटता हूँ।**"**३** उसी दिन पति की मृत्यु होगई थी जब भी यह घटना याद आति है तो दुखना रोपदती थी।

एक दिन ठाकुर का ऊँट चराने वाला दुखना के महुए के पेड की डालियों को तोड-तोड कर खिलाने लगा तो दुखना चिल्लानेलगी, डांटनेलगी, डालियाँ तोडने से मना करने लगी, वह नहीं माना तो ऊँट को डंडा लेकर मारने लगी **'ऊँट टस्स से मस्स नहीं हुआ'**। बाद में ऊँटहरे के उपर डंडा चलादेती है तो उल्टा ऊँटहरा दुखना को मारदेता है वह गिरजाती है, वह चिला- चिल्ला कर रोने लगती है । गाँव के सारे लोग आते हैं, देख्ते हैं, उल्टा दुखना को ही डाँटकर चले जाते हैं। किसी ने कह- " **महुए की पत्ती इसके लिए सोन है सोना"।४**

उस दिन दुखना रात को घर में दीप भी नहीं जलाई, न वह रात को खाई, न उसे नींद आई, रात भर रोती रही । सुबह के अंधेरे में ही उठकर एक बार पेड और उसकी डालियों को प्यार से देखती है और तीर्थ यात्रा को जाने का संकल्प करके सुबह मुँह अंधेरे में रिस्तेदारों के गाँव को पैसे उधार लाने चली जाती है। सुबह उठकर लोग देखते हैं तो दुखना कहीं भी दिखाई नहीं देती। गाँव के लोग डर जाते हैं और सोचते हैं कि कहीं कुएँ में गिरकर मरगई होगी, आत्महत्या करली होगी।

३-४ दिन तक दुखना न दिखने के कारण ठाकूर अपने लोगों को बुलाकर पेड कटवाडालता है। पेड ठीक दुखना के घर पर जाकर गिरता है। घर, मटकी, मिट्टी के बरतन, चारपाई सब एक साथ टूट जाते हैं। उसी दिन दोपहर को कुबडी दुखना लकडी टेकते घर को आती है, तो उसे देखकर लोग लडने चिल्लाने का भूत समझ के अपने-अपने घरों में छिपजाते हैं । ठाकूर भी डर के मारे घर के बाहर नहीं निकलता। हरखू की माँ दुखना को देख कर ठाकूर को डाँटते हुए आती है। लेकिन दुखना पेड गिराने वालों को और ठाकूर को कुछ नहीं बोलती वह समाधान से रहती है। वह महुए के पेड की एक डाली उठाकर देखती है और बाद में हरखू की माँ को कहती है- " **हरखू की माँ चलती हो तीरथ को? मैं तो चली।"५**

इस प्रकर लेखक मार्कण्डेय का उद्देश्य 'महुए के पेड' इस कहानी में स्त्री समस्या का चित्रण करना है। यहाँ लेखक मनुष्य के जीवन में और वृद्धावस्था में आनेवाली समस्याओं को उजगर करते हैं। दुखना विधव स्त्री को गाँव के सारे लोग किस प्रकार सताते हैं, इसका परिचय इस कहानी में मिलता है। दुखना अंत में हारकर सब ठाकूर के और गाँववालों के हवाले करके गाँव घर छोडकर तीर्थ यात्रा को चली जाती है। दुखना बूढी तीर्थ यात्रा कर के सुख चैन से अपने जीव को भगवान के हवाले करती है। यहाँ ठाकुर, गाँव के लालची लोग संसार की माया, संपत्ति की दुराशा में नरक की जिंदगी जीते रहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

	पुस्तक का नाम		संपादक		पाठ का ना	
लेखक	**पृष्ठ संख्या**	**पंक्ति**				
१.	अभिनव कथा भारती	चक्रधर	महु एका पेड	मार्कंडेय	९०	२-४
२.	अभिनव कथा भारती	चक्रधर	महु एका पेड	मार्कंडेय	९०	७-१०
३.	अभिनव कथा भारती	चक्रधर	महु एका पेड	मार्कंडेय	९०	१-२३
४.	अभिनव कथा भारती	चक्रधर	महु एका पेड	मार्कंडेय	९१	२८
५.	अभिनव कथा भारती	चक्रधर	महु एका पेड	मार्कंडेय	९४	४